

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, निर्गमन, सत्र 9, निर्गमन 16-18

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट द्वारा निर्गमन की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 8, निर्गमन 16-18 है।

आइए हम सब मिलकर प्रार्थना करें। पिता, हम आपकी देखभाल के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। हम आपकी पुस्तक में दिए गए वादे के लिए आपका धन्यवाद करते हैं कि आप हमें ढोते हैं। मूर्तियाँ बनाने वाले लोगों को अपने देवताओं को ढोना पड़ता है, लेकिन आपने हमें बनाया है और आप हमें हमारे सफ़ेद बालों तक ढोते हैं, आपका वचन कहता है।

और इसलिए, हम प्रार्थना करते हैं कि आप आज रात हमारी बहन रूथ को गोद में लें। उसके बहुत करीब रहें। उसके जीवंत विश्वास के लिए धन्यवाद।

आपके वचन को समझने और उसके प्रति उसके प्रेम के लिए आपका धन्यवाद। हे प्रभु, कृपया आप उसके समय को जानते हैं। आप सभी बातें जानते हैं। हम चाहते हैं कि उसे और अधिक वर्ष दिए जाएँ, बस हमारे लिए एक आशीर्वाद के रूप में।

लेकिन हम उसे आपके हाथों में सौंपते हैं और प्रार्थना करते हैं, हे प्रभु, कि यदि आप उसे और अधिक वर्ष देना चाहते हैं, तो आप चमत्कारिक तरीके से इस टूटी हुई हड्डी को जोड़ देंगे और आने वाले वर्षों में उसकी मदद करेंगे। धन्यवाद। एक बार फिर, हम आपके वचन के लिए आपका धन्यवाद करते हैं।

आपकी चमत्कारी शक्ति के लिए धन्यवाद। धन्यवाद कि आप इस कमरे में हैं और अपने सत्य को हमारे जीवन में लागू करना चाहते हैं। सीखने की खुशी के लिए धन्यवाद, प्रभु।

लेकिन, हे भगवान, हमें केवल एक बेकार की शिक्षा से बचाओ जहाँ हम और अधिक तथ्य इकट्ठा करते हैं, लेकिन वास्तव में, ऐसे तथ्य जो हमारे जीवन में कोई फर्क नहीं डालते। ऐसा न हो, प्रभु। आपकी सच्चाई हमारे दिलों में घर कर जाए और हमें बदल दे ताकि हम आपके जैसे बन जाएँ। आपके नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

ठीक है, आज रात हमें बहुत कुछ कवर करना है। हम पिछले सप्ताह अध्याय 16 तक नहीं पहुँच पाए, इसलिए इसका मतलब है कि हमें 16, 17, 18 करना है।

आप में से कुछ लोग जानते हैं कि मैं रेलवे का दीवाना हूँ। 1890 के दशक में, एक सज्जन को लगा कि वह 90 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से साइकिल चला सकता है, इसलिए उसने रेलवे के साथ समझौता किया, और उन्होंने पीछे की तरफ़ हुड के साथ एक कोच बनाया, और उन्होंने दो मील की दूरी तक ट्रैक के बीच में बोर्ड बिछाए, और देखते ही देखते, उस बड़े से गोल हिस्से पर एक गियर लग गया, और उसने यह कर दिखाया। उसने 90 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से साइकिल चलाई।

एक समय पर, और मैं यहीं पर आ रहा हूँ, एक समय पर, वह धीमा हो गया, और वह उस हुड की सुरक्षा से बाहर निकलने वाला था, और यह सब खत्म हो गया होता, लेकिन वह वास्तव में उस पर झुक गया और पकड़ लिया और उस सुरक्षा में वापस आ गया और यह कर दिखाया। इसलिए हमें आज रात इन तीन घंटों के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी ताकि हम यहाँ वापस पटरी पर आ सकें। अध्याय 15, श्लोक 22 से 18:27, मैंने यहोवा के विधान का रहस्योद्घाटन कहा है।

अध्याय 1 से 15 में, हमें यहोवा की शक्ति का रहस्योद्घाटन हुआ था, लेकिन अब हमें उसके विधान का रहस्योद्घाटन हुआ है, और अध्याय 15, श्लोक 22 से 27 में, हमने उस विधान का प्रारंभिक प्रमाण देखा जब उसने अपने लोगों के लिए माराह और फिर रपीदीम में पानी उपलब्ध कराया। अब, अध्याय 16 में, एक बार फिर, श्लोक 2 में, इस्राएल के लोगों की पूरी मण्डली जंगल में मूसा और हारून के खिलाफ़ बड़बड़ाने लगी। इस्राएल के लोगों ने उनसे कहा, काश हम मिस्र देश में यहोवा के हाथ से मर जाते, जब हम मांस के बर्तनों के पास बैठकर भरपेट रोटी खाते थे, क्योंकि तुम हमें इस जंगल में इस पूरी मण्डली को भूख से मारने के लिए लाए हो।

मुझे लगता है कि अगर मैं उस समय मूसा होता, तो मैं इस्तीफा दे देता। आखिरकार, मैंने जो किया है, आखिरकार, हमने देखा है, भगवान ने दिखाया है, तुम सोचते हो कि तुम मिस्र में एक अद्भुत जगह पर थे और मैं तुम्हें यहाँ तुम्हें मारने के लिए लाया हूँ। इसलिए, यह मेरे दिमाग में मूसा की वफ़ादारी के लिए एक तरह की गवाही है कि उसने बस यह नहीं कहा, इसे भूल जाओ, मैं वापस जाकर भेड़ों की देखभाल करने जा रहा हूँ।

वे जवाब नहीं देते, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। आयत 6, 8 और 12 पर ध्यान दें। मूसा और हारून ने सभी लोगों से पूछा, क्या? शाम को तुम जान जाओगे।

यहाँ आपकी सूची के लिए एक और 'नहीं' है। और वे क्या जानेंगे? यह यहोवा था जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाया, मैं नहीं। मैं तुम्हें मिस्र से बाहर नहीं लाया।

और यह विषय यहाँ कई अध्यायों में चलेगा। उन्हें मिस्र से कौन बाहर लाया? क्या यह मूसा था, या यह प्रभु था? लोगों के लिए यह कहना बहुत आसान है कि यह मूसा ने किया था। नहीं, आप जानेंगे कि यह प्रभु ही था।

ठीक है, श्लोक 8. यह वह नहीं है जो मैं चाहता हूँ। नहीं, यह 12 है। यह थोड़ा अलग है।

क्या जानते हो? कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। और याद रखो, इसका शाब्दिक अर्थ है, मैं यहोवा हूँ, तुम्हारा परमेश्वर। प्रभु, हमारे लिए संप्रभुता या राजा या उन सभी चीज़ों के इस विचार में फंसना बहुत आसान है।

यहोवा उससे कहीं बढ़कर है। तुम जानोगे कि मैं वही हूँ जो मैं हूँ। मैं ही हूँ जो अस्तित्व में है, जो सभी चीज़ों को अस्तित्व में लाता है।

मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिस पर सब कुछ निर्भर करता है। आज मैं एक अच्छे मित्र से बात कर रहा था, और वह एक किताब के बारे में बात कर रहा था जो उसने एक क्वांटम भौतिक विज्ञानी द्वारा पढ़ी थी जो यहूदी है। और वह इस तथ्य के बारे में बात कर रहा था कि ऊर्जा, यदि पर्याप्त तेज़ी से बढ़ाई जाए, तो पदार्थ बन जाती है।

और इस क्वांटम भौतिक विज्ञानी, एमआईटी पीएचडी ने कहा कि प्रेम ही ऊर्जा है। और यह सब इसलिए मौजूद है क्योंकि भगवान ने अपने वचन से इसे गति दी है। यह मेरे लिए आकर्षक है।

याद रखें, जॉन, परमेश्वर प्रेम है। प्रेम में कितनी ऊर्जा है? मैं हूँ, और आप इसे जान जाएँगे। पद चार के अनुसार, मन्त्रा देने की विशेष विशेषताओं का उद्देश्य क्या था? हम एक मिनट में उन विशेषताओं के बारे में बात करेंगे।

लेकिन इसका उद्देश्य क्या है? हाँ, मैं उनकी परीक्षा लेने जा रहा हूँ, कि क्या वे मेरे टोरा में चलेंगे। अब, याद रखें, हम सिनाई की ओर बढ़ रहे हैं। और सिनाई में, परमेश्वर उन्हें अपना टोरा, अपने निर्देश देने जा रहा है।

और फिर मुद्दा यह है कि परमेश्वर उन्हें इस बिंदु पर ले जा रहा है जहाँ वे इसे स्वीकार करेंगे। परमेश्वर उन पर सिर्फ़ बम गिराकर यह नहीं कहेगा कि, धमाका, यह हो गया, इसे ले लो या छोड़ दो। वह उन्हें एक वाचा में आमंत्रित करने जा रहा है।

टोरा, निर्देश, उस वाचा का हिस्सा होंगे। लेकिन वे एक रिश्ते को स्वीकार कर रहे हैं। हम इस बारे में अगले सप्ताह बात करेंगे, भगवान की इच्छा से, और मैं आज रात काफी तेज़ी से आगे बढ़ूंगा।

तो, सवाल यह है कि क्या वे उस वाचा को स्वीकार करेंगे जिसमें ये निर्देश मिलेंगे? और वह उन्हें इसके लिए तैयार करने की कोशिश कर रहा है। और मन्त्रा की खास विशेषताएँ इसके लिए डिज़ाइन की गई हैं। छोटी चीज़ों में आज्ञाकारिता के बारे में क्या, हमें बड़ी चीज़ों में आज्ञाकारिता के लिए तैयार करना? क्या यह एक वैध सिद्धांत है? भोजन का सेवन।

हाँ, हाँ, हाँ। कई साल पहले एक फिल्म आई थी जिसका नाम था कराटे किड।

फिल्म में, इस बच्चे को समुदाय के लोग और बच्चे पीट रहे हैं। इसलिए, वह कराटे सीखने का फैसला करता है। और उसे अपनी योजना से कहीं ज़्यादा अच्छा मिलता है।

और प्रशिक्षक ने उसे अपनी पिछली बाड़ को रंगने के लिए भेजा। और उसने कहा, अब, जब तुम रंगो, जब तुम ऊपर जाओ, साँस अंदर लो। और जब तुम नीचे जाओ, साँस बाहर छोड़ो।

खैर, बच्चे को लगता है कि यह पागलपन है। और वह बस पेंट को चाटता है। और प्रशिक्षक कहता है, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, तुम्हें यह करना ही होगा।

और अंत में, निश्चित रूप से, एक विशेष कराटे चाल होती है जिसमें उस तरह की साँस नियंत्रण शामिल होता है। और अंत में, बच्चा, वास्तव में, उस विशेष तकनीक का उपयोग करके बदमाश

को पीटता है। मेरे लिए, यह हमेशा से ही इन स्पष्ट रूप से व्यर्थ अभ्यासों का उदाहरण रहा है, जिनसे भगवान हमें गुज़ार सकते हैं।

और हम कहते हैं कि यह बेवकूफी है। इससे मुझे कुछ हासिल नहीं होने वाला। इससे कुछ हासिल नहीं होने वाला।

और कुछ सालों बाद हम कहते हैं, ओह। क्योंकि आप देख सकते हैं, भगवान बहुत किफायती हैं। वह कभी कुछ नहीं खोता।

और इसका हमेशा महत्व रहेगा। और ऐसा ही यहां भी है। यह एक अवसर है।

हम भूखे हैं। भगवान कहते हैं, ठीक है। ठीक है।

हम यहाँ एक ऐसा उपकरण रखने जा रहे हैं जो आपको महत्वपूर्ण क्षण आने पर हाँ कहने के लिए तैयार कर देगा। ठीक है। मन्ना देने से हमें क्या सबक मिलता है? आइए विस्तार से बात करते हैं।

लालच काम नहीं आता। इसमें क्या विस्तार है? ठीक है। आज के लिए बस इतना ही काफी है।

मैं कभी भी बिना अपराध बोध के यह प्रार्थना नहीं कर सकता। हमारे पास दो सप्ताह के लिए पर्याप्त भोजन है। कृपया हमें अब से तीन सप्ताह के लिए भोजन दें।

लेकिन यह समझ में आता है। ठीक है। तो, नंबर एक, और अगर आप बहुत ज़्यादा इकट्ठा करते हैं तो क्या होता है? यह सड़ जाता है, है न? मन्ना की एक और विशेषता क्या है? भगवान प्रदान करता है।

हाँ हाँ यह है।

और मैं यही चाहता हूँ। शुक्रवार को क्या होगा? शुक्रवार को क्या होगा? उह-हह।

शुक्रवार को बिना किसी गिरावट के दोगुना करें। हम अगले सप्ताह सब्बाथ के बारे में बात करेंगे जब हम दस आज्ञाओं को देखेंगे। लेकिन यहाँ एक महत्वपूर्ण सिद्धांत शामिल है कि परमेश्वर क्यों चाहता है कि हम एक दिन की छुट्टी लें और इसमें क्या सबक शामिल है।

तो यह नकारात्मक हिस्सा है। इन दोनों से क्या सकारात्मक पहलू निकलता है? हमें भरोसा करना सिखाया जा रहा है, है न? हममें से ज़्यादातर लोग भगवान पर निर्भर नहीं रहना चाहते। हम थोड़ा बीमा चाहते हैं।

मैं बीमा का विरोधी नहीं हूँ, लेकिन मैं हमारी आत्माओं में उस वृत्ति का विरोधी हूँ जो कहती है, बस मुझे ऐसी जगह पर ले चलो जहाँ मुझे भगवान पर निर्भर न रहना पड़े। बस मुझे ऐसी जगह

पर ले चलो जहाँ मैं हूँ, और हमने इस बारे में पहले भी बात की है: नियंत्रण। और इसलिए, भगवान, 40 वर्षों से, मुझे आश्चर्य है कि क्या सुबह में मन्ना वहाँ होगा।

यह वहाँ है। यह वहाँ है। मुझे आश्चर्य है कि क्या आज शुक्रवार को डबल होगा।

यह दुगुना है। और फिर, आप कहते हैं, 40 साल हो गए, और वे अभी भी वैसे ही लोग हैं जैसे वे थे। वाह।

डेंट्स के बारे में बात करें। श्लोक 29, सब्त के बारे में क्या कहता है? प्रभु ने आपको सब्त का दिन दिया है। और हमारे पास मार्क 2:27 को देखने का समय नहीं है, लेकिन यीशु यही कहते हैं।

सब्त मनुष्य के लिए बनाया गया था, मनुष्य सब्त के लिए नहीं। अब, किस अर्थ में सब्त एक उपहार है, विश्राम का दिन? हाँ। हाँ।

फिर से, मैं अगले सप्ताह इसके बारे में और बात करना चाहता हूँ। लेकिन यह भावना, यह नहीं कि आपको सब्बाथ रखना चाहिए, लेकिन अंदाज़ा लगाइए क्या? आपको सब्बाथ मिलता है। यह कई तरह से दिलचस्प रहा है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, लोग लगातार सातों दिन काम कर रहे थे, और इस तरह के अथक, अथक दबाव के कारण गंभीर मनोवैज्ञानिक समस्याएं सामने आने लगीं। भगवान ने हमें यह दिया है, और हम इसके साथ क्या करते हैं? फिर से, मैं अगले सप्ताह इसके बारे में बात करना चाहता हूँ। ठीक है।

अब, अध्याय 16 के अंतिम भाग को देखें। उन्हें मन्ना के साथ क्या करना चाहिए? श्लोक 33 में, कुछ मन्ना को एक बर्तन में रखना है और उसे कहाँ रखना है? प्रभु के सामने। अंततः, इसे वास्तव में वाचा के सन्दूक में रखा गया।

अब, क्यों? ठीक है, यह इस बात की याद दिलाता है कि भगवान ने उनके लिए क्या किया था। यह क्यों महत्वपूर्ण है? हम शरीर और आत्मा हैं, और इसका मतलब है कि हमें दृश्यमान सुरागों की आवश्यकता है। इसलिए मैं वेदी में दृढ़ विश्वास रखता हूँ।

जाहिर है, हमारे और ईश्वर के बीच जो होना है वह आध्यात्मिक मामला है। अगर ऐसा नहीं होता है, तो बाकी कुछ भी मायने नहीं रखता। लेकिन दूसरी तरफ, अगर आप कुछ ऐसा भौतिक काम कर सकते हैं जो आध्यात्मिक रूप से आपके काम को दर्शाता है, तो कुछ तय हो जाता है।

यहाँ भी यही बात लागू होती है। परमेश्वर विश्वासयोग्य है। परमेश्वर पर भरोसा किया जा सकता है।

मुझे हर समय अपने जीवन पर नियंत्रण रखने की ज़रूरत नहीं है। वास्तव में, मेरे लिए ऐसा होना बेहतर नहीं है। एक अनुस्मारक, स्मृति।

हमने इस बारे में पहले भी बात की है। जब तक मैं तुम्हें पढ़ा रहा हूँ, हम इस बारे में फिर से बात करेंगे। आप आध्यात्मिक और भौतिक को अलग नहीं कर सकते।

वे एक साथ चलते हैं। अब, इसमें क्या खतरा है? आप उस वस्तु की पूजा करना शुरू कर देते हैं। आप उसमें जादुई शक्ति डालना शुरू कर देते हैं।

क्योंकि हमारे पास यह चीज़ है, इसलिए यह सब ठीक है। हमारे साथ कुछ भी बुरा नहीं हो सकता। याद रखें, ठीक यही हुआ था जब इब्रानियों को डर था कि वे पलिशितियों से हार जाएँगे, और वे सन्दूक लेकर युद्ध में उतर गए।

मैं भगवान को यह कहते हुए सुनता हूँ, तुम्हें लगता है कि यह जादू है, है न? अच्छा, इसे देखो। आओ, पलिशितियों। यह बक्सा ले लो।

हाँ, इससे उन्हें कोई मदद नहीं मिली। नहीं, नहीं।

इससे उन्हें कोई मदद नहीं मिली। उन्हें लगा कि यह खरगोश का पैर है। और हमेशा याद दिलाने और जादू के बीच एक बहुत ही महीन रेखा होती है।

बिल्कुल। बिल्कुल। पीतल का साँप उनके पाप के परिणामस्वरूप आई विपत्ति से परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण उद्धार की याद दिलाता है, और वे उस चीज़ की पूजा करते हैं।

हम कट्टर मूर्तिपूजक हैं। और इसीलिए, पुराने नियम में बार-बार ये आदेश मिलते हैं: मूर्तियाँ मत बनाओ। और हम सोचते हैं कि चूँकि हमारे घरों में कोई छोटी मूर्तियाँ नहीं हैं, इसलिए हमारे पास कोई मूर्तियाँ नहीं हैं।

लेकिन हम जिस बारे में बात कर रहे हैं वह इस दुनिया में हेरफेर के माध्यम से दिव्य को नियंत्रित करने का प्रयास है। और ऐसा हर समय होता है। बिल्कुल सही।

हाँ। सोने का बछड़ा इसका एक उदाहरण है। और फिर, हमें इसके बारे में बात करने का अवसर मिलेगा।

लेकिन यह एक बहुत ही महीन रेखा है। और यह है, मुझे आपको बताना है, मुझे ऐसा लगता है, और मैं इस मामले में एक सच्चा लूथरन हूँ, प्रभु के भोज के बारे में रोमन कैथोलिक समझ जादू बन जाती है। आपने पादरी के सामने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है, और आपने अपना प्रायश्चित्त कर लिया है।

अब आप इसे लें, और जादुई तरीके से आपके पाप क्षमा हो जाएंगे। मुझे लगता है कि यीशु ने कहा था, यह मेरी याद में करो, किसी जादुई ताबीज की तरह नहीं। ठीक है।

क्या आप 16 के बारे में कुछ और बात करना चाहते हैं? हाँ। हाँ। हाँ।

हाँ, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। ठीक है। अध्याय 17, उन्होंने रेफ़िडिम में डेरा डाला, लेकिन लोगों के पीने के लिए पानी नहीं था।

इसलिए, लोगों ने मूसा से झगड़ा किया और कहा, हमें पीने के लिए पानी दो। उन्होंने मारा और फिर एलाम के सबक क्यों नहीं सीखे? वास्तव में याददाश्त कमज़ोर है। ज्ञान हस्तांतरित करने में असमर्थता।

मूसा ही इसका स्रोत है। इसलिए मूसा को यह करना ही होगा। मूसा ने किसी तरह हमें निराश किया है।

हाँ, मुझे ऐसा लगता है। उन्होंने यह सबक नहीं सीखा है कि परमेश्वर पर भरोसा किया जा सकता है, लेकिन यह उसके समय पर है, हमारे समय पर नहीं।

यही मुद्दा है। हाँ, मुझे आप पर भरोसा है, प्रभु, और मैं इसे अभी चाहता हूँ। आपने ऐसा नहीं किया है, प्रभु।

आपने मेरी शर्तें पूरी नहीं की हैं। जैसा कि हमने पहले भी कहा है, पुराने नियम में वजन भरोसे का एक बुनियादी हिस्सा है। हाँ, प्रभु, मुझे पूरा भरोसा है कि आप अपने समय में मेरी ज़रूरतें पूरी करेंगे, मेरी नहीं।

और मैं इसी भरोसे के साथ इंतज़ार करूँगा। यही बात उन्होंने नहीं सीखी है। उनकी ज़रूरतें और इच्छाएँ उन्हें आगे बढ़ा रही हैं, और यही बात भरोसे को कम करती है।

तो, चौथी आयत में हम कौन सा महत्वपूर्ण सिद्धांत सीखते हैं? मूसा के सामने एक बड़ी समस्या है। तुम हमें और हमारे बच्चों और हमारे पशुओं को प्यास से मारने के लिए मिस्र से क्यों लाए हो? मूसा क्या करता है? वह प्रभु के पास जाता है। वह प्रभु के पास जाता है।

हममें से बहुतों के लिए प्रार्थना ही अंतिम उपाय है। किसी ने कहा है कि जब सब कुछ विफल हो जाए, तो प्रार्थना का प्रयास करें। नहीं, मूसा ने प्रार्थना को शुरू में ही आजमाया था।

हे प्रभु, मेरी मदद करो। मेरी मदद करो। ठीक है, हमारा समय उड़ रहा है, और इसलिए मैं भी उड़ना चाहता हूँ, अगर मैं उड़ सकता हूँ।

छठी आयत को देखिए। मूसा को क्या करना है? वह चट्टान पर किस चीज़ से प्रहार करता है? पांचवीं आयत हमें बताती है। लाठी से, जिस लाठी से उसने नील नदी को खून में बदल दिया, जिस लाठी से उसने आसमान को टिड्डियों से भर दिया, जिस लाठी से उसने समुद्र को विभाजित कर दिया।

वह छड़ी चट्टान पर टकराती है, और पानी बाहर निकलता है। अब, क्या किसी को याद है कि संख्या 20 में क्या हुआ था? हाँ, वे एक पीढ़ी बाद उसी स्थिति में हैं। पहली पीढ़ी जंगल में मर चुकी

है, और वे वादा किए गए देश की ओर जा रहे हैं, और दूसरी पीढ़ी ने अपने माता-पिता से सीखा है।

मेरी माँ के घुटनों और अन्य जोड़ों पर सीखी गई बातें, और वे शिकायत कर रहे हैं। और मूसा भी यही करता है। वह और हारून तम्बू में जाते हैं।

वे कहते हैं, भगवान, हमें इन लोगों के साथ क्या करना चाहिए? और भगवान कहते हैं, वहाँ एक चट्टान है। बस बाहर जाओ और उससे बात करो। कई लोग मुझसे कभी न कभी पूछेंगे, क्या आप जानते हैं कि मूसा को वादा किए गए देश से बाहर रखा गया था, सिर्फ इसलिए क्योंकि उसने चट्टान से बात करने के बजाय उसे मारा था? और मुझे कहना होगा कि इसके अलावा भी बहुत कुछ है।

मूसा तम्बू से बाहर आता है, और यही कहता है। अब, तुम विद्रोहियों, क्या हमें तुम्हारे लिए पानी लाना चाहिए? धमाका, छप, और ब्रह्मांड के किनारे से एक छोटी सी आवाज़ कहती है, मूसा, तुमने मेरे नाम को पवित्र नहीं किया, जिसका क्या मतलब है? ओह, मूसा, तुम्हारे पास भगवान को अच्छा दिखाने का एक शानदार अवसर था।

और तुमने क्या किया? तुमने इसका इस्तेमाल खुद को अच्छा दिखाने के लिए किया। और तुम्हें पता है, उन्होंने मूसा द्वारा बनाए गए पीतल के साँप की पूजा की। अगर मूसा, यह मूसा जो अपनी छड़ी से पानी बना सकता है, उन्हें जॉर्डन के पार ले जाता, तो छह महीने में वे महान परमेश्वर मूसा की पूजा कर रहे होते।

यहाँ फिर से वही बात है जिसके बारे में मैंने आपसे पहले भी बात की है। परमेश्वर एक ही काम को दो बार करने से नफरत करता है। देखिए, मूसा ने इसे समझ लिया है।

ओह, हाँ, मुझे पानी बनाना आता है। तुम अपनी छड़ी से चट्टान पर मारो। यही हमने अध्याय 17 में किया था।

मैं यह कर सकता हूँ। भगवान का शुक्र है। अब हमने प्रशिक्षण पहियों को हटा दिया है।

मैं यहीं से शुरू करता हूँ। मंत्रालय के बारे में यही सबसे बुरी बात है। आप सीखते हैं कि इसे कैसे करना है।

मैंने पिछले चार सालों में कई सेमिनरी छात्रों से कहा है कि सेमिनरी आपकी आत्मा को नुकसान पहुंचा सकती है क्योंकि आप ऐसा करना सीखते हैं। आप सीखते हैं कि बिना प्रार्थना किए भी प्रार्थनापूर्ण कैसे दिखना है। आप सीखते हैं कि ऐसा आमंत्रण कैसे दिया जाए जिससे लोग अपनी सीटों से उठ जाएं।

आप सीखते हैं कि कैसे एक ऐसा उपदेश दिया जाए जिससे महिलाएँ अपने रूमाल की ओर हाथ बढ़ाएँ। आप सीखते हैं कि यह कैसे करना है। और एक दिन, आपको पता चलता है कि यहाँ एक बहुत बड़ा खालीपन है।

यही तो हो रहा है। भगवान ने कहा, अपनी लाठी से चट्टान पर वार करो, और मूसा ने वैसा ही किया। और अब उसे इसका पता चल गया है।

इस तरह आप पानी बनाते हैं। धमाका, धमाका। यह काम कर गया।

यही कठिनाई है। यह अक्सर काम करता है। आप एक महान चर्च बना सकते हैं और इस प्रक्रिया में अपनी आत्मा खो सकते हैं।

वैसे, आप सेमिनेरियन नहीं हैं, लेकिन फिर भी, मुझे उम्मीद है कि आप अपने दिलों और जीवन में इसका अनुप्रयोग देखेंगे। ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं। अध्याय 17, अमालेकियों।

जैसा कि मैंने पृष्ठभूमि नोटों में उल्लेख किया है, अमालेकी लोग सिनाई प्रायद्वीप के सबसे उत्तरी छोर पर रहते थे। इसलिए, वे लगभग 150 मील की दूरी तय कर आए हैं, जो दासों के इस समूह के खिलाफ एक पूर्व-आक्रमण है, जिसके बारे में उन्हें स्पष्ट रूप से लगता था कि वे एक आसान लक्ष्य होने जा रहे हैं। अब, यह क्यों मायने रखता है कि मूसा के हाथ उठे थे या नहीं? याद रखें, जब तक उसके हाथ उठे हुए हैं, तब तक इस्राएली जीत रहे हैं।

जब वह थक जाता है और उसके हाथ ढीले पड़ने लगते हैं, तो इस्राएली हार जाते हैं। अंत में, हूर और हारून उसके हाथों को सहारा देते हैं। अब, इससे क्या फ़र्क पड़ता है? इसका क्या मतलब है? ठीक है, नंबर एक, जीतना भगवान के आशीर्वाद पर निर्भर करता है।

भगवान के आशीर्वाद के बिना, हम हार जाते हैं। तो यही वह ज़रूरी बात है जो यहाँ सिखाई जा रही है। अब, इस तरह की चीज़ों में क्या खतरा है? यहाँ हम फिर से जादू के साथ हैं।

हम संकेत पर निर्भर रहते हैं और सिद्धांत को भूल जाते हैं। सिद्धांत हर काम के लिए है, और हमें ईश्वर का आशीर्वाद मिलना चाहिए। तो, ओह हाँ, आपको किसी का हाथ ऊपर उठाना होगा।

यही तरीका है जिससे आपको आशीर्वाद मिलता है। नहीं, नहीं। यह उन सभी दूसरी चीज़ों की तरह है जिनके बारे में हम बात कर रहे हैं।

मुद्दा सिद्धांत का है, और भगवान शायद फिर कभी ऐसा नहीं करेंगे। पूरे ब्रह्मांड में भगवान के पास बोरियत की सबसे कम सीमा है। उन्हें किसी काम को दोबारा करने से नफरत है।

लेकिन हम चाहते हैं कि वह ऐसा करे। हम इसे नीचे लाना चाहते हैं ताकि हम तंत्र का पता लगा सकें, और हमें अब उस पर भरोसा करने की ज़रूरत नहीं होगी - सूत्र पर।

हाँ, हाँ। हाँ, मुझे इसका उत्तर नहीं पता, क्या भगवान ने वास्तव में उसे यह बताया था या फिर मूसा ने महसूस किया था कि हमें भगवान के आशीर्वाद की आवश्यकता है, और मैं अपने हाथ उठाकर भगवान के आशीर्वाद का प्रतिनिधित्व करूँगा। हमें इसका उत्तर नहीं पता।

मुझे लगता है कि दोनों में से कोई भी संभव है। हाँ, हाँ। भगवान तक और दुनिया तक।

हाँ, हाँ, हाँ। अगर वे संबंध बनाते हैं। मुझे संदेह है कि जब आप अपने जीवन के लिए लड़ रहे हैं, तो आप संबंध नहीं बना पाएंगे, लेकिन यह निश्चित रूप से संभव है।

और इसलिए। परमेश्वर कहता है, श्लोक 15 और 14, इसे एक पुस्तक में एक स्मारक के रूप में लिखो जो यहोशू के कानों में सुनाई गई है, कि मैं आकाश के नीचे से अमालेक की याद को पूरी तरह से मिटा दूंगा। अब, यहाँ क्या हो रहा है? उह, अन्य लोगों ने इस्राएल के साथ युद्ध किया, और यह उनके बारे में नहीं कहा गया।

आपके पास यह कथन है: प्रभु के सिंहासन के विरुद्ध एक हाथ। खैर, अन्य लोगों ने सिंहासन के विरुद्ध अपने हाथ रखे। यहाँ क्या हो रहा है? याद रखें कि उन्होंने पहले इसराइल पर हमला किया, और यह न केवल इसराइल और उनके बीच, बल्कि अंततः, जैसा कि वे करते आ रहे हैं, एक बात बन गई।

हाँ, अगर यह वही अगाग है, तो यह बहुत बड़ा सवाल है। लेकिन वैसे भी, हाँ, वे परमेश्वर के लोगों पर हमला करने के लिए अपने रास्ते से हट गए हैं। मान लीजिए कि वे सफल हो गए थे।

हमारे पास यह नहीं होता। यह इतिहास का महत्वपूर्ण बिंदु है। यह मुक्ति के इतिहास का एक महत्वपूर्ण बिंदु है।

ये कोई साधारण लोग नहीं हैं, और यह इतिहास की कोई साधारण घटना नहीं है। यह परमेश्वर है जो इन लोगों के माध्यम से यीशु मसीह के लिए मार्ग तैयार कर रहा है, और अमालेकियों ने इसे मिटाने के लिए अपनी पूरी कोशिश की है। आप ऐसा नहीं करना चाहते।

आप ऐसा नहीं करना चाहते। तो, यह एक अनोखी तरह की स्थिति है। यह सिर्फ मोआबियों और इसराइल के बीच की लड़ाई नहीं है।

विभिन्न बिंदुओं पर, या अम्मोनियों और इस्राएलियों, या सीरियाई और इस्राएलियों। नहीं, नहीं। यह विनाश का प्रयास है, और परमेश्वर कहता है, नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते।

ठीक है। चलिए अध्याय 18 पर चलते हैं। हम यहाँ ठीक चल रहे हैं।

तो, अब तक परमेश्वर ने अपने लोगों को क्या प्रदान किया है? ठीक है, भोजन। और क्या? पानी और युद्ध में विजय। उसने सुरक्षा प्रदान की है।

उसने भोजन उपलब्ध कराया है। उसने पानी उपलब्ध कराया है। ठीक है, अब हम अध्याय 18 पर आते हैं।

पद 1 के बारे में क्या? मूसा के ससुर, मिद्यान के याजक यित्रो ने मूसा और इस्राएल, अपने लोगों के लिए परमेश्वर द्वारा किए गए सभी कार्यों के बारे में सुना, और यह भी कि कैसे प्रभु ने इस्राएल

को मिस्र से बाहर निकाला। अब, उस कथन के निहितार्थ क्या हैं? यह बात फैल रही है। वे सुन रहे हैं।

और वे क्या सुन रहे हैं? परमेश्वर ने इस्राएल के लिए क्या किया है। अब, मान लीजिए कि इस्राएल अभी-अभी मिस्र से बाहर निकला है। कोई कहानी नहीं होगी।

सारी कठिनाइयाँ, सारे तनाव, सारी चिंताएँ, सारी धमकियाँ भगवान के लिए कुछ ऐसा नाटकीय करने का अवसर बन जाती हैं जिसे दुनिया सुनेगी। अब फिर से, अगर मैं आपकी तरफ एक उंगली उठाता हूँ, तो उनमें से तीन मेरी तरफ इशारा करती हैं। क्या आप कभी एक आसान जीवन की कामना करते हैं? क्या आप कभी चाहते हैं कि भगवान आपकी सारी समस्याओं को मिटा दें? मैं चाहता हूँ।

मैं करता हूँ। लेकिन भगवान कहते हैं, शायद मैं उन चीजों को तुम्हारे रास्ते में आने दूँ ताकि मैं तुम्हें बचा सकूँ। और दुनिया सुनेगी।

लेकिन आपको भरोसा करना होगा। बिल्कुल। लेकिन यह उनकी कठिनाइयों के कारण ही है कि दुनिया सुनती है, हे भगवान, भगवान ने उन लोगों के लिए क्या किया है।

और इसलिए, मुद्दा यह है कि, प्रभु, यदि आप मेरी मदद करेंगे, तो मैं आसान रास्ता नहीं मांगूंगा। लेकिन मैं आग्रह करता हूँ, प्रभु, कि कठिनाइयों में, आप मुझे आप पर निर्भर रहने में मदद करेंगे और आपको मेरे जीवन में अपना काम करने की अनुमति देंगे ताकि दुनिया सुन सके। नहीं, यह कोई आसान रास्ता नहीं है।

हम स्वर्ग की यात्रा कर रहे हैं। हाँ। हाँ।

हाँ। यह, फिर से, मैं पूर्वाग्रही हूँ। लेकिन जब मैं लोगों को यह कहते हुए सुनता हूँ कि राजा के बच्चों को कोई समस्या नहीं होनी चाहिए, तो मैं कहता हूँ, मुझे लगता है कि यीशु राजा के बच्चे नहीं थे, है न? और यीशु कहते हैं, अगर वे मालिक के साथ ऐसा करते हैं, तो आपको क्या लगता है कि वे नौकरों के साथ क्या करेंगे? आसान रास्तों की कोई गारंटी नहीं है।

और जब हम प्रचारक लोगों से कहते हैं, आपको यीशु को स्वीकार करना चाहिए क्योंकि तब आपको कोई और समस्या नहीं होगी, तो हम झूठ बोलते हैं। समस्याएँ आमतौर पर तब शुरू होती हैं जब आप यीशु को स्वीकार करते हैं क्योंकि तब आप दुश्मन के लिए खतरा बन जाते हैं। ठीक है।

एलीएजेर का जन्म स्पष्ट रूप से मिस्र पहुँचने के बाद हुआ था। ऐसा प्रतीत होता है कि मूसा और सिप्पोरा के जाने पर उनका एकमात्र बच्चा गेशोम था। लेकिन अब एक और बच्चा है, और उसका नाम रखा गया है मेरा परमेश्वर एक सहायक है।

विपत्तियों के बीच में, उन्होंने बच्चे का नाम ऐसा रखा। मुझे लगता है कि यह आस्था की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है। जैसा कि मैंने पृष्ठभूमि नोटों में कहा है, जाहिर है, मूसा ने ज़िपोराह और दो लड़कों को इस बीच में किसी समय उसके पिता के पास वापस भेज दिया था।

हमें इस बारे में विस्तृत जानकारी नहीं है, कि क्या उनके खिलाफ़ कोई धमकियाँ थीं। मुझे नहीं पता। कुछ लोग कहेंगे, ठीक है, अगर मूसा ने अपने परिवार को वापस भेजा तो यह उसकी ओर से अविश्वास था।

हमारे पास कोई सबूत नहीं है। इसलिए, जेथ्रो सिप्पोरा और दो लड़कों को लेकर आता है। और मूसा उससे क्या कहता है? मूसा अपने ससुर से मिलने के लिए बाहर गया और झुककर उसे चूमा।

उन्होंने एक दूसरे से उनका हालचाल पूछा और तंबू में चले गए। वह छोटी सी कविता बहुत रोचक है। आप उस तरह की सेटिंग में सम्मेलनों को देख सकते हैं।

और मेरे लिए यह बहुत मुश्किल है क्योंकि मैं सीधे मुद्दे पर आने वाला व्यक्ति हूँ। कैरन कहती है कि भगवान ने मेरे स्वभाव में छोटी-छोटी बातें करने की आदत को छोड़ दिया है। लेकिन उस तरह की सेटिंग में, हाँ, आप सीधे मुद्दे पर नहीं आते।

आप मौसम के बारे में बात करते हैं और झुंड कैसे हैं और बाकी सब कुछ। और अंत में, आखिरकार, आप उस बात पर पहुँच जाते हैं जिसके लिए आप आए थे। बिल्कुल सही।

ओह, बिल्कुल। अगर आप सीधे मुद्दे पर आ जाते हैं जिस पर आप बात करना चाहते थे, तो यह बहुत असभ्यता है। मुझे लगता है कि यह बिल्कुल सही है।

यह बिल्कुल सही है। प्रभु ने इस्राएलियों के लिए फिरौन और मिस्रियों के साथ जो कुछ किया था, मार्ग में उन पर जो भी कठिनाइयाँ आईं और प्रभु ने उन्हें कैसे बचाया। हाँ।

और यित्री ने उन सभी भलाईयों के कारण आनन्दित हुआ जो यहोवा ने इस्राएल के साथ की थीं, अर्थात् उसने उन्हें मिस्रियों के हाथ से छुड़ाया था। अब, पद 10 में यित्री ने कहा, धन्य है यहोवा, जिसने तुम्हें मिस्रियों के हाथ से छुड़ाया है और फिरौन के हाथ से लोगों को मिस्रियों के हाथ से छुड़ाया है। पद 11, सबसे महत्वपूर्ण पदों में से एक है।

यह आयत महत्वपूर्ण क्यों है? अब, मुझे पता है। जेथ्रो को कैसे पता? हाँ, वह वहाँ नहीं था, हालाँकि। उसे कैसे पता? गवाही।

बाइबल में किसी के धर्म परिवर्तन का यह पहला उदाहरण है, गवाही के ज़रिए धर्म परिवर्तन। यीशु ने थॉमस से कहा, थॉमस, अपना हाथ यहाँ रखो। और थॉमस अपने चेहरे के बल गिरकर कहता है, हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर।

और यीशु कहते हैं, क्या तुम इसलिए विश्वास करते हो क्योंकि तुमने देखा है? धन्य हैं वे लोग जिन्होंने नहीं देखा और फिर भी विश्वास करते हैं। यहाँ इतिहास का प्रभाव है।

यह सिर्फ मूसा की कही बात नहीं है, आप जानते हैं क्या? मैं एक दिन पहाड़ पर बैठा था, और मैं ईश्वर के बारे में सोचने लगा, और मैंने तय किया कि ईश्वर प्रेम है, कि ईश्वर बहुत, बहुत भरोसेमंद है, और अगर हम उस पर भरोसा करते हैं, तो वह हमारा ख्याल रखेगा। आप इस बारे में क्या सोचते हैं, पिताजी? और मुझे लगता है कि पिताजी कहेंगे, आपके लिए अच्छा है। लेकिन यह ईश्वर है, जिसने समय और स्थान में कुछ किया है, और आपकी रिपोर्ट में दिए गए सबूत मुझे आश्चर्य करते हैं।

मूसा जानता है क्योंकि उसने परमेश्वर को ऐसा करते देखा है। लोगों को भी जानना चाहिए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को ऐसा करते देखा है। फिरौन जानता है क्योंकि उसने अपनी पूरी सेना को नष्ट होते देखा है।

जेथ्रो ने इनमें से कुछ भी नहीं देखा है, लेकिन ऐतिहासिक गवाह कायल हैं। अब, मैं तुमसे कहता हूँ, अगर कोई दुर्घटना नहीं हुई, अगर कोई विजय नहीं हुई, अगर कोई डेविड नहीं था, अगर कोई सोलोमन नहीं था, अगर कोई यशयाह नहीं था, तो तुम यहाँ अपना समय बर्बाद कर रहे हो। तुम्हें घर पर ट्यूब के सामने अपना दिमाग जलाना चाहिए और शायद थोड़ा नियंत्रित पदार्थ लेना चाहिए क्योंकि जब तुम मरते हो, जैसा कि आदमी ने कहा, तुम रोवर की तरह मरते हो।

वह एक ही बार में मर गया, और वह पूरी तरह से मर गया। और यही कहानी का अंत है, दोस्तों। इसलिए, पाठ का ऐतिहासिक साक्ष्य वह आधार है जिस पर हम विश्वास करते हैं कि यह धर्मशास्त्र है।

अब, आज जो पढ़ाया जा रहा है वह यह है कि उन्होंने इस धर्मशास्त्र को हवा से ही गढ़ लिया और इसे समर्थन देने के लिए एक कहानी गढ़ ली। खैर, उनके लिए अच्छा है। मुझे लगता है कि शायद मुझे बौद्ध कहानी ज़्यादा पसंद है।

इसलिए, यह श्लोक बहुत महत्वपूर्ण है। अब, मैं जानता हूँ कि यहोवा सभी देवताओं से बड़ा है क्योंकि इस मामले में, उन्होंने लोगों के साथ अहंकार से व्यवहार किया। और मूसा के ससुर यित्रो ने परमेश्वर के लिए होमबलि और बलि चढ़ाई।

और हारून इस्राएल के सभी बुजुर्गों के साथ मूसा के ससुर के साथ परमेश्वर के सामने रोटी खाने आया। क्या पल था। क्या पल था।

अब्राहम से की गई उस प्रतिज्ञा का पहला फल, तुम्हारे द्वारा, दुनिया के सभी राष्ट्र धन्य होंगे। यह पहला फल है। और हम कुछ अंतिम फल हैं या शायद बीच के फल हैं या जो कुछ भी परमेश्वर इन दिनों कर रहा है।

तो, ठीक है, हमें यहाँ आगे बढ़ना होगा। श्लोक 13 से 27. अब, मेरे पास मिस्रियों के बारे में एक पृष्ठभूमि नोट है।

आज तक मिस्र में कोई कानून संहिता नहीं है। कम से कम पाँच मेसोपोटामिया कानून संहिताएँ हैं। हमारे लिए सबसे प्रसिद्ध हम्मुराबी है।

लेकिन चार हैं और शायद पाँचवाँ, माफ़ कीजिए, तीन और शायद चौथा मेसोपोटामिया में हम्मुराबी से पहले था जहाँ कानून संहिता है। मिस्र में कोई कानून संहिता नहीं है। और संभावित कारण यह है कि फिरौन ईश्वर है, और वह अपना मन बदल सकता है।

आज वह जो कहता है वह कानून है, लेकिन कल वह जो कहता है वह कानून होगा और उन्हें उससे सहमत होने की ज़रूरत नहीं है। अब, मूसा ने मिस्र में अध्ययन किया था, है न? तो, वह यहाँ क्या कर रहा है? श्लोक 13. अगले दिन, मूसा लोगों का न्याय करने के लिए बैठा, और लोग सुबह से शाम तक मूसा के चारों ओर खड़े रहे।

जब मूसा के ससुर ने देखा कि वह लोगों के लिए क्या-क्या कर रहा है, तो उसने कहा, यह क्या कर रहा है तू लोगों के लिए? तू अकेला क्यों बैठा रहता है और लोग सुबह से शाम तक तेरे इर्द-गिर्द क्यों खड़े रहते हैं? मूसा ने अपने ससुर से कहा कि जब लोग किसी बात पर झगड़ रहे थे, तो वे उसके पास आए और मैंने एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति के बीच फैसला किया। मैं उन्हें परमेश्वर की विधियाँ और उसके नियम बताता हूँ।

वह वही कर रहा है जो उसने मिस्र में सीखा था। आप भी यही करते हैं। तो, जेथ्रो को इसमें क्या परेशानी दिखती है? हर कोई थक जाएगा।

हाँ, मूसा थक जाएगा, लोग थक जाएँगे, और वास्तव में, वे उसे ईश्वर के रूप में देख रहे हैं। फिर से, जब आप अधिकार की स्थिति में होते हैं तो यह कहना बहुत आसान होता है, ओह, यह वास्तव में कठिन है। यह मुझे मार रहा है। लेकिन वास्तव में, वास्तव में, यह एक तरह से अच्छा है।

सब कुछ मुझ पर निर्भर करता है। तो, जेथ्रो उसे क्या करने को कहता है? प्रतिनिधि नियुक्त करो। प्रतिनिधि नियुक्त करो।

प्रतिनिधि। हाँ, यह अर्थ है कि मूसा को परमेश्वर के पास जाना है। मुझे लगता है कि यहाँ अधिकार की रेखाओं का स्पष्ट अर्थ है।

यदि 10 वाले व्यक्ति के पास कोई समस्या है जिसे वह नहीं संभाल सकता, तो वह उसे 50 वाले व्यक्ति को दे देता है। और यदि वह उसे नहीं संभाल सकता, तो वह उसे 100 वाले व्यक्ति को दे देता है। वह उसे नहीं संभाल सकता, तो वह उसे हजारों वाले व्यक्ति को दे देता है।

वह इसे संभाल नहीं सकता, वह इसे मूसा को देता है, और मूसा इसे भगवान के पास ले जाता है। हाँ, वास्तविक अर्थ में। इसलिए, मुझे लगता है कि स्पष्ट रूप से अधिकार की सीमाएँ हैं, लेकिन मुद्दा मूसा का है, ऐसे हजारों मुद्दे हैं जिनसे आपको निपटना नहीं है।

इनसे आमने-सामने व्यक्तिगत रूप से निपटा जा सकता है, जहाँ यह व्यक्ति इस स्थिति को उन तरीकों से जानता है, जो मूसा कभी नहीं जान सकता। वह जानता है कि ये दोनों परिवार एक-दूसरे से झगड़ रहे हैं, और वह उस स्थिति में इससे निपटने की स्थिति में है। इसलिए, मूसा को केवल अघुलनशील समस्याएँ ही मिलती हैं।

जब मैं कॉलेज का अध्यक्ष था, तो मैं बोर्ड के एक सदस्य से हर समस्या को हल करने की अपनी ज़रूरत के बारे में बात कर रहा था। वह हँसा। उसने कहा, जॉन, आपको केवल वही समस्याएँ मिलती हैं जिन्हें हल नहीं किया जा सकता।

ठीक है, इससे इस पर एक और प्रकाश पड़ता है। अधिकारियों की चार विशेषताएँ क्या होनी चाहिए? श्लोक 21. मुझे लगता है कि यह काफी महत्वपूर्ण है।

हां, नंबर एक, सक्षम। किसी भी मूर्ख को नियुक्त न करें। अगर वे सक्षम नहीं हैं, तो वे यहां से चले जाएंगे।

नंबर दो, जो ईश्वर से डरते हैं, और ये दोनों बिल्कुल एक दूसरे पर निर्भर हैं। अगर मेरी क्षमता सिर्फ मुझमें है और स्थिति को संभालने की मेरी क्षमता है, तो हम मुश्किल में हैं। हमें लगातार इस बात से आकार लेना पड़ता है कि एक ईश्वर है जो मुझे जो कुछ भी देता है उसके लिए मुझे जवाबदेह ठहराता है।

अगर आप ईश्वर से डरते हैं और सक्षम नहीं हैं, तो कोई बात नहीं। लेकिन अगर आप सक्षम हैं और ईश्वर से नहीं डरते, तो कोई बात नहीं। ठीक है, तीसरा, ईमानदारी से।

और यह बात और भी मजबूती से कही गई है, है न? वे रिश्तत से नफरत करते हैं। बिल्कुल सही। यह उल्लेखनीय है।

अब, यह दिलचस्प है। कुछ साल पहले, कई साल पहले, हममें से कुछ लोग बाइबल अध्ययन में शामिल थे, और मैंने पाया कि नीतिवचन में, किसी को वह करने के लिए उपहार देना जो उसे करना चाहिए, बुद्धिमानी माना जाता है। उन्हें वह करने के लिए उपहार देना जो उन्हें नहीं करना चाहिए, वह बुराई है।

और यह मेरे लिए दिलचस्प था, कि उस स्थिति में, उस दुनिया में, किसी को वह करने में मदद करने के लिए उपहार देना जो उन्हें करना चाहिए, कोई बुरी बात नहीं है। लेकिन यहाँ मुद्दा यह है कि आप उन्हें खरीद नहीं सकते। हाँ, हाँ।

नहीं, मैं नहीं हूँ। यह एक, यह एक बहुत अच्छी सूची है। मैं चाहूँगा कि मेरे बारे में भी ऐसा ही कहा जाए।

और मुझे लगता है कि अगर कोई हमारे बारे में ऐसी बातें कह सकता है, तो यह बहुत बड़ी प्रशंसा है। हाँ, यह एक उचित बात है। मुझे लगता है कि मैं इसे बुद्धिमान और विनम्र कहूँगा।

वे ऐसी परिस्थिति को पहचानने में सक्षम होते हैं जो उनके परे है और फिर कह पाते हैं, अरे, यह मेरे बस की बात नहीं है। हाँ, अच्छा, अच्छा। ठीक है, तो अब हमारे पास चार चीजें हैं जो भगवान ने जंगल में लोगों के लिए प्रदान की हैं।

पानी, भोजन, सुरक्षा और संगठन। पहले तीन को उसने चमत्कारिक ढंग से प्रदान किया। चौथा उसने जेथ्रो की बुद्धि के माध्यम से प्रदान किया।

और मुझे लगता है, व्यक्तिगत रूप से, यह बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे खुशी है कि वे सभी चमत्कारी नहीं थे, क्योंकि भगवान कई तरह से काम करते हैं। हम अक्सर कहते हैं, अगर यह चमत्कारी नहीं था, तो भगवान ने ऐसा नहीं किया।

नहीं, नहीं। नहीं, नहीं। खास तौर पर, मैं उपचार के क्षेत्र के बारे में सोचता हूँ।

हम किस तरह के दिन जी रहे हैं। ईश्वर ने हमें चंगा करने की क्षमता दी है। और यह ईश्वर की ओर से है।

त्रासदी तब होती है जब हम कहते हैं, ओह, हमें ईश्वर की ज़रूरत कम होती जा रही है क्योंकि अब हम इतने समझदार हो गए हैं कि हम सब कुछ खुद ही कर सकते हैं। और मुद्दा यह है कि आपको यह कहाँ से मिला? यह ईश्वर का काम था। तो यहोवा चमत्कार करने वाला है, लेकिन साथ ही, वह वह है जो अपने अच्छे उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अपने मानव बच्चों के माध्यम से काम करता है।

फिर से, वह अपने काम में असीम रचनात्मक है। तो, क्या परमेश्वर परवाह करता है? हाँ, वह परवाह करता है। वह हमारी शारीरिक ज़रूरतों की परवाह करता है।

वह हमारे रिश्तों की उन स्थितियों की परवाह करता है जहाँ हमें सुरक्षा की ज़रूरत होती है। वह जीवन के सामान्य कामकाज और उनके भीतर मानवीय रिश्तों की भी परवाह करता है। क्या परमेश्वर परवाह करता है? हाँ, वह परवाह करता है।

तो, हम सिनाई की तलहटी में आने के लिए तैयार हैं। हम उसकी शक्ति को जानते हैं। हम उसकी नियति को जानते हैं।

इस समय हम जो नहीं जानते वह है उसका स्वभाव और चरित्र। शक्तिशाली, हाँ। परवाह करने वाला, हाँ।

लेकिन वह किस तरह का ईश्वर है? तो, जैसा कि हमने पाठ्यक्रम की शुरुआत में बात की थी, यह पुस्तक एक रास्ता है। किससे बाहर निकलने का रास्ता? मिस्र से बाहर निकलने का रास्ता? अध्याय 15 तक वे मिस्र से बाहर निकल चुके हैं। किससे बाहर निकलने का रास्ता? धर्मशास्त्रीय अंधकार से बाहर निकलने का रास्ता।

वे नहीं जानते कि ईश्वर कौन है, और वे सीख रहे हैं। हाँ? मैंने हमेशा ऐसा देखा है क्योंकि उनके पास कभी कोई ईश्वर नहीं था। और ऐसे समय भी आए जब उसने कहा, मैं उन सभी को मार डालूँगा।

हां। वैसे, मुझे यकीन नहीं है कि मैं ऐसा कहूँगा, लेकिन रिश्तों के कारोबार में सीखने के लिए बहुत कुछ है। यह तो तय है।

ठीक है। बहुत-बहुत धन्यवाद। अगले सप्ताह, अध्याय 19 और 20।

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट द्वारा निर्गमन की पुस्तक पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 8, निर्गमन 1 6-18 है।